गोलोक संचित्र

ब्रह्म संहिता ५.४३:
गोलोकनाम्नि निजधाम्नि तले च तस्य
देवी महेशहरिधामसु तेषु तेषु।
ते ते प्रभाननिचया विहिताश्च येन
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि॥

जिन्होंने गोलोक नामक अपने सर्वोपरि धाम में रहते हुए उसके नीचे स्थित क्रमशः वैकुण्ठलोक (हरिधाम), महेशलोक तथा देवीलोक नामक विभिन्न धामों के विभिन्न स्वामियों को यथायोग्य अधिकार प्रदान किया है, उन आदि पुरुष भगवान् गोविन्द का मैं भजन करता हूँ।

तात्पर्य : गोलोक धाम सबसे ऊपर स्थित है। ब्रह्माजी, गोलोक तक देखते हुए, अन्य धामों का वर्णन अपने धाम के सापेक्ष्य में कर रहे हैं : क्रम में पहले चौदह लोकों (जैसे,सत्यलोक आदि) से बना यह भौतिक जगत है, जिसे देवी-धाम कहा जाता है। देवी-धाम के ऊपर शिव-धाम है, जिसका महाकाल-धाम नामक एक भाग अंधकार से ढका है। शिव-धाम के इस भाग से अंतर्भेदित सदाशिव लोक महाआलोकमय है। उसके ऊपर हरि-धाम या दिव्य वैकुण्ठलोक है। माया के विस्तार के रूप में देवी-धाम का प्रभाव एवं काल, स्थान तथा द्रव्यमय शिवलोक का प्रभाव भगवान् का विभिन्नांश-गत स्वांशाभासमय प्रभाव है। किन्तु हरि-धाम का चिद्-ऐश्वर्य प्रभाव एवं महामाधुर्य प्रभाव गोलोक के अन्य समस्त ऐश्वर्यों पर राज्य करता है। परमेश्वर गोविंद ने अपने साक्षात् अथवा परोक्ष प्रभाव द्वारा उन धामों के प्रभावों का विधान करते है।

कृष्णलोक या गोलोक वृन्धावन :
आध्यात्मिक जगत, पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री कृष्ण का धाम

१. ब्रह्म संहिता ५.२:
(दूसरे श्लोक की दिव्य लीलाओं हेतु प्रयुक्त आध्यात्मिक धाम का वर्णन किया गया है।) कृष्ण का गोकुल नामक सर्वोत्कृष्ट धाम सहस्त्र-पंखुडी वाले कमल के सदृश है। जिसके बीच में उनके अनन्त पक्ष के एक अंश से खिले कमल के समान कर्णिका ही श्री कृष्ण का वास्तविक निवासस्थान है।

२. ब्रह्म संहिता ५.३:
उस चिन्मय कमल की कर्णि के क्षेत्र में ही कृष्ण निवास करते हैं। वह षट्कोणमय आकृति वही है, जिसमें परमतत्त्व की प्रकृति एवं पुरुष अधिष्ठित हैं। सारी शक्तियों के चिन्मय स्त्रोत के रूप में, स्व-ज्योतिर्मय कृष्ण, हीरे की भाँति कीलक रूप में खड़े हैं। अठारह चिन्मय अक्षरों वाला पवित्रनाम (मंत्र) छह अंगों वाले षटकोणीय आकार में अभिव्यक्त है।

३. ब्रह्म संहिता ५.४:
नित्यधाम गोकुल की कर्णिका ही श्रीकृष्ण का षटकोणीय धाम है। उसकी पंखुडियाँ जो कृष्ण के प्रति परमप्रेम समर्पित तथा उनकी अंशस्वरूपा स्वजातीय गोपियों का निवासस्थान हैं। ये पंखुडियाँ अनेक दीवारों जैसी हैं और खूब चमकदार हैं। उस कमल की फैली पत्तियाँ श्रीकृष्ण की परमप्रेयसी श्री राधिका के उपवन रूपी धाम हैं।

४. ब्रह्म संहिता ५.५:
(इस श्लोक में गोकुल की बाह्य आवरण-भूमि का वर्णन है।) गोकुल के बाहरी भाग को घेरे हुए श्वेतद्वीप नामक एक अद्‌भुत चौकोनाकृतिक धाम है। श्वेतद्वीप चारों दिशाओं में चार खण्डों में विभक्त है। एक एक खण्ड में क्रमशः वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध विराजते हैं। ये चार विभक्त धाम चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) तथा उन पुरुषार्थों के साधनकारी मन्त्रात्मक चार वेदों (ऋग्, साम,यजुर और अर्थव) से आवृत हैं। आठ दिशाएँ तथा ऊर्ध्व अधो इन दसों दिशाओं में दस त्रिशूल अमस्थित हैं। आठ दिशाएँ महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद तथा नील नामक आठ रत्नों से शोभित हैं। दस दिशाओं के मन्त्ररूपी दस दिग्पाल हैं। शुक्ल, रक्त, श्याम एवं गौर वर्णों के पार्षद विमला आदि नामक असामान्य शक्तियों सहित सभी ओर दिप्यमान हैं।

गोलोक (कृष्णलोक) के विभाजन :

द्वारका	मथुरा	गोकुल

उस आध्यात्मिक आकाश के सर्वोच्च भाग में कृष्णलोक नामक आध्यात्मिक लोक है। इसके तीन विभाग हैं-द्वारका, मथुरा तथा गोकुल।
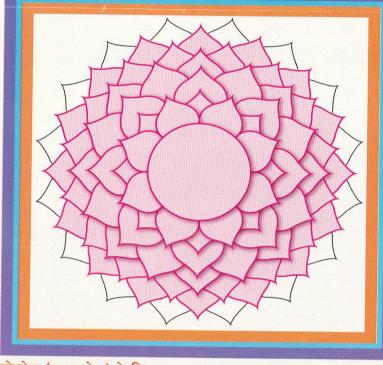
जगन्नाथ पुरी	नवद्वीप

बृहद् भागवतामृत ३.५.२०९-२१० :
किन्तु कृपया मुझसे यह र्निदेश सुनिए-भगवान् का दिव्य/पवित्र धाम, श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र, जिसका आपने पहले पृथ्वी पर भ्रमण किया था, यहाँ (द्वारका) से ज़्यादा दूर नहीं हैं। वहाँ सुभद्रा और बलराम के संग, भगवान् पुरुषोत्तम उन्हीं क्रिड़ाओ का आनंद लेते हैं जिनका वे गोवर्धन में, वृन्दावन के जंगल में और यमुना के तीरों पर अभिनय करते हैं।

ब्रह्म संहिता ५.५, तात्पर्य :
इसीलिए चैतन्य लीला के व्यासावतार, श्रील ठाकुर वृंदावन ने नवद्वीप धाम का वर्णन श्वेतद्वीप नाम से किया है। इसी श्वेतद्वीप में गोकुल लीलाओं के चरम अंश नित्य नवद्वीप-लीलाओं के रूप में रहते हैं। अतएव नवद्वीप व्रज तथा गोकुल एक ही अखण्ड तत्त्व हैं। उनमें विविधता केवल प्रेमाभक्ति की विभिन्नता के अनुसार अनन्त भावों की विषेशता प्रकट होने से रहती है।
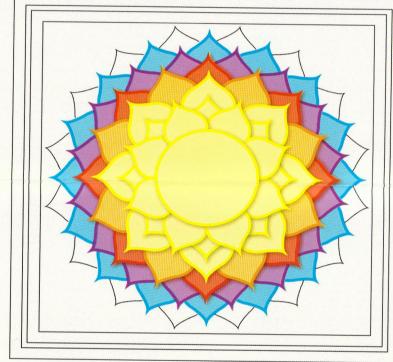
रसों का विभाजन :

माधुर्य रस	वात्सल्य रस	सख्य रस
दास्य रस	शांत रस	

अयोध्या

५. बृहद् भागवतामृत २.४.२३९:
यहाँ (वैकुण्ठलोक) से थोड़ी दूरी पर है रघुपति, रघुकुल के दिव्य स्वामी, की भव्य अयोध्या पुरी। और वहाँ से दूर प्रकाशमान है यदु के दिव्य स्वामी की प्रिय द्वारका पुरी।

वैकुण्ठ लोक : भगवान् विष्णु का दिव्य धाम

६. लघु भागवतामृत १.५.२४७-२५० (पद्म पुराण, उत्तरखण्ड २५५.५७-६४) :
भौतिक और आध्यात्मिक जगत की सीमा पर शुभ विरजा नदी बहती हैं, इसका जल वेदपुरुष के स्वेद द्वारा प्रकट हुआ है। इस नदी के दूर तट पर, आध्यात्मिक व्योम में हैं, शाश्वत, अविनाशी, अनन्त आध्यात्मिक जगत, जो संपूर्ण ब्रह्माण्ड का तीन चौथाई भाग है, जो शुद्ध सत्व से बना हुआ हैं, इसका कभी क्षय नहीं होता, यह ब्रह्मन् का लोक है, यह अनन्त कोटि सूर्य और अग्नि की भाँति तेजवान है, यह कभी नष्ट नहीं होता, यह पूर्ण ज्ञान से समाविष्ट हैं, यह विशाल है, यह काल के प्रलय से अस्पृश्य हैं, यह अपरिमेय हैं, यह वृद्धावस्था से मुक्त है, यह नित्य आध्यात्मिक सत्य हैं, यह जागृतता, निद्रा और गहरी निद्रा जैसी भौतिक अवस्थाओं से परे हैं, यह सुवर्णमय तेज से युक्त हैं, यह मोक्ष का धाम हैं, यह आध्यात्मिक आनन्द प्रदान करता हैं, इसके समान या उच्च कोई नहीं हैं, इसका कोई आदि या अन्त नहीं हैं, यह शुभ हैं, यह अद्भुत हैं, यह रम्य नित्य और आनन्द का सागर है। ये भगवान् विष्णु के परम धाम के गुण हैं। भगवान् हरि का यह धाम सूर्य या चन्द्र अथवा विद्युत से प्रकाशित नहीं होता। जो इस धाम को प्राप्त करता है, वह इस भौतिक जगत में कभी भी नहीं लौटता। ब्रह्मा के सौओं एवं लाखों दिनों में भी कोई भगवान् विष्णु के इस नित्य एवं अच्युत धाम का वर्णन नहीं कर सकता।

७. लघु भागवतामृत१.५.२५१-२५२ (पद्म पुराण, उत्तरखण्ड२५६.९-१२):
भगवान् के चरणों की सेवा करने वाले अत्यन्त भाग्यशाली जीव, जो श्री के पति के चरणकमलों की प्रेममय सेवा के अमृत से परिपूर्ण हैं, आध्यात्मिक प्रेम प्रधान करने वाले भगवान् विष्णु के परम धाम को प्राप्त होते हैं। भगवान् हरि का वह वैकुण्ठ धाम अनेक नगरों, वायुयानों और रत्नजडित राजमहलों से युक्त हैं। इसके बीच में, (अयोध्या?) की विशाल नगरी गौरवान्वित है क्योंकि वह माया से आवरणित नहीं हैं। इसके चारों ओर सुवर्ण और मणियों से रंगीन दिवारें, रत्नजड़ित तोरण एवं चार विशाल अलंकृत द्वार हैं।

८. लघु भागवतामृत१.५.२५३-२५४ (पद्म पुराण उत्तर खण्ड२५६.१२-१५):
चाण्ड की अध्यक्षता में द्वारपाल, कुमुद एवं अन्य द्वारा यह रक्षित हैं। चाण्ड और प्रचण्ड पूर्व द्वार का संरक्षण करते हैं, भद्र और सुभद्र दक्षिण द्वार, जय और विजय पश्चिम द्वार और दाता और विधाता उत्तर द्वार का संरक्षण करते हैं। कुमुद, कुमुदाक्ष, पुण्डरीक, वामन, शंकुकर्ण, सर्वनेत्र, सुमुख और सुप्रतिष्ठीत इस नगर की दिशाओं का संरक्षण करते हैं, हे सुन्दर मुख वाली पार्वती।

९. लघु भागवतामृत१.५.२५६ (पद्म पुराण उत्तर खण्ड २५६.१७-१८):
इसके मध्य में, मणियों से जडित दिवारें, विशाल द्वारों से सुसज्जित, अनेक विमानों और महलों से परिवृत्त एवं सर्वत्र सुन्दर अपसराओं द्वारा सुशोभित भगवान् का सुन्दर राजमहल है।

१०. लघु भागवतामृत१.५.२५८(पद्म पुराण उत्तर खण्ड २५६.२०-२१):
इसके मध्य में, वेदों से बना हुआ सुन्दर और शुभ सिंहासन हैं, जो नित्य वेद पुरुषों, और धर्म, ज्ञान, ऐश्वर्य एवं वैराग्य के देवताओं से घिरा हुआ हैं।

११. लघु भागवतामृत१.५.२५९ (पद्म पुराण उत्तर खण्ड २५६.२३-२५):
अग्नि, सूर्य और चन्द्र के देवता, कुर्म, शेष और तीनों वेद के स्वामी गरुड, इस सिंहासन के मध्य में निवास करते हैं। वैदिक श्लोक एवं सभी धार्मिक मंत्र भी उस पवित्र स्थान में रहते हैं, यह स्थान सभी वेदों से बना हुआ हैं और स्मृति शास्त्र में इसे योग पीठ कहा गया हैं।

१२. लघु भागवतामृत१.५.२६६ (पद्म पुराण, उत्तर खण्ड २५६.२५-२६):
मध्य में, सूर्य के समान प्रभावशाली आँठ पंखुडियों वाला कमल का पुष्प है, और इस पुष्प के मध्य में है गायत्री मंत्र। हे सुन्दर पार्वती, उस स्थान पर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् लक्ष्मीदेवी के साथ विराजमान हैं।

१३. लघु भागवतामृत१.५.२७९ (पद्म पुराण, उत्तर खण्ड २५६.४७-५०):
आध्यात्मिक व्योम में, परमेश्वर उनकी नित्य संगिनि, महालक्ष्मी के साथ सदैव दिव्य आनन्द का आस्वादन करते हैं। हे सुन्दर मुख वाली देवी, भू और लीला उनके दोनों तरफ रहती हैं, और विमला आदि शक्तियाँ पंखुडियों की आँठ दिशाओं में रहती हैं। विमला, उत्कर्षीणी, ज्ञाना,क्रिया,योगा,प्रह्वी और ईशाना भगवान् की रानियाँ हैं। चन्द्रमा के समान प्रभावशाली चामर धारण कर, वे अपने पति, अच्युत भगवान् को प्रसन्न करती हैं।

१४. लघु भागवतामृत१.५.२८३ (पद्म पुराण, उत्तर खण्ड २५६.५३-५४):
अनन्त शेष आदि भक्तगण, पक्षियों के राजा गरुड, सेनापति विश्वक्षेन एवं अन्य नित्य मुक्त संगीगणों से घिरे हुए, रमादेवी के संग भगवान् परम ऐश्वर्य के साथ भोग करते हैं।

१५. लघु भागवतामृत१.५.२८८-२८९(पद्म पुराण से सारांशित):
परमेश्वर को घिरे हुए प्रथम चक्कर (आवरण) में, वासुदेव आदि चर्तुव्यूह विस्तार, लक्ष्मीदेवी एवं अन्य संगिगण के साथ, पूर्व दिशा से प्रारंभित, आँठ दिशाओं में स्थित हैं। दक्षिणपूर्व दिशा से प्रारंभित, लक्ष्मी, सरस्वती, रति और कान्ति क्रमानुसार स्थित हैं।

१६. लघु भागवतामृत१.५.२९० :
आध्यात्मिक व्योम के दूसरे चक्कर में, भगवान् केशव से प्रारंभित, चौबीस विष्णु विस्तार, आँठ दिशाओं में प्रकट होते हैं और इनकी गणना तीन समूहों में की गई हैं। (केशव, नारायण, माधव, गोविंद, विष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम, वामन, श्रीधर, हृषीकेश, पद्मनाभ, दामोदर, वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, पुरुषोत्तम, अधोक्षज, नृसिंह, अच्युत, जनार्दन, उपेन्द्र, हरि और कृष्ण)।

१७. लघु भागवतामृत१.५.२९१ :
आध्यात्मिक व्योम के तीसरे चक्कर में, मत्स्य, कुर्म आदि, भगवान् के दस अवतार, दसों दिशाओं में प्रकट होते हैं।

१८. लघु भागवतामृत१.५.२९२ :
आध्यात्मिक व्योम के चौथे चक्कर में, सत्य, अच्युत, अनन्त, दुर्गा, विश्वक्षेन, गजानन (गणेश), शंखनिधि और पद्मनिधि आठों दिशाओं में प्रकट होते हैं।

१९. लघु भागवतामृत१.५.२९३ :
आध्यात्मिक व्योम के पाँचवे चक्कर में, ऋग् वेद से प्रारंभित चार वेद, सावित्री, गरुड, धर्म और यज्ञ समान रूप से प्रकट होते हैं।

२०. लघु भागवतामृत१.५.२९४ :
आध्यात्मिक व्योम के छटवे चक्कर में भगवान् का शंख, चक्र, गदा, पद्म, खग, शार्ग धनुष और मुसल प्रकट होते हैं। सातवे चक्कर में, इन्द्रादि देवता प्रकट होते हैं।

२१. लघु भागवतामृत१.५.२९५ :
आध्यात्मिक व्योम में साध्य, मरुत और विश्वदेव, सभी नित्य हैं। अन्य जो, भौतिक जगत के स्वर्गीय शासक (देवतागण) हैं, वे अनित्य हैं।

ब्रह्मन् या ब्रह्मज्योति

२२. ब्रह्म संहिता ५.४० :
जिनकी प्रभा उपनिषदों मे वर्णित निर्विशेष ब्रह्म का स्त्रोत है तथा करोड़ों ब्रह्माण्डों में अनंत विभूतियों के रूप में भेद को प्राप्त होने के नाते निरवच्छिन्न, पूर्ण, अनंत, सत्य के रूप में प्रकट है, उन आदिपुरुष भगवान् गोविंद का मैं भजन करता हूँ।

वरजा नदी या कारण अर्णव
आध्यात्मिक और भौतिक जगत का मध्यस्थ स्थान

२३. ब्रह्म संहिता ५.७ :
कृष्ण माया शक्ति के साथ कभी रमण नहीं करते तथापि उस परम सत्य का माया से सर्वतोभाव से विच्छेद भी नहीं है। भौतिक जगत की सृष्टि करने की इच्छा से अपनी चित्-शक्ति रमा पर कालशक्ति के दृष्टिपात द्वारा वे जो रमण करते हैं, वह गौण कार्य है।

गोलोक वृन्दावन

श्वेतद्वीप

देखें : पृष्ठ-८५, १२७, १५७ →

अयोध्या

हरि-धाम (वैकुण्ठ)

देखें : पृष्ठ-१२८ →

देखें : पृष्ठ-६५, १२१ → ब्रह्मज्योति

कारण अर्णव (विरजा नदि)

देखें : पृष्ठ-१३०

देखें : पृष्ठ-१७४

देखें : पृष्ठ-२४, १८८ →

देखें : पृष्ठ-३४ →

महत्-तत्त्व

महेश-धाम

देखें : पृष्ठ-१७६, १८७

देखें : पृष्ठ-८२

देखें : पृष्ठ-१५८

गर्भोदकशायी विष्णु

गर्भोदक समुद्र

देवी-धाम

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

२४. ब्रह्म संहिता ५.८ :
(माया के संग की गौण प्रक्रिया का वर्णन हो रहा है।) भगवत्प्रिया चिच्छक्तिरूपा रमादेवी समस्त जीवों की नियतिरूपा हैं। कृष्ण का दिव्य अंश इस भौतिक जगत की सृष्टि के समय उस कृष्णांश से जो स्वांश-ज्योति प्रकट होती है, वही भगवान् शम्भुरूप भगवद्-लिंग अर्थात् प्रकटित चिन्ह-विशेष है। वही सनातन ज्योति के धुंधले प्रकाश का आभास है। वह लिंग नियति के वशिभूत भौतिक जगत के उत्पादक का अंश है। नियति से जो प्रसविनी शक्ति उदित होती है, वही अपरा शक्ति योनिरूपा माया का स्वरूप है। उन दोनों के संयोग से हरि का महत्तत्व-रूप प्रतिफलित कामबीज उत्पन्न होता है।

२५. ब्रह्म संहिता ५.१० :
इस भौतिक संसार का उपादानमय पुरुष लिंग रूपी (महेश्वर) शम्भु नमित्तांश माया-रूप शक्ति से युक्त हैं। जगत्पति महाविष्णु उसमें ईक्षणांश से आविर्भूत होते हैं।

२६. ब्रह्म संहिता ५.१२ :
वे महाविष्णु ही इस जगत में नारायण नाम से पुकारे जाते हैं। उन सनातन पुरुष से ही दिव्य कारण समुद्र उत्पन्न हुआ है। परव्योम निवासी संकर्षण के अंश उपर्युक्त सहस्त्रांश परमपुरुष भगवान् उसमें योग-निद्रा में शयन करते हैं।

२७. ब्रह्म संहिता ५.१३ :
महाविष्णु के रोमछिद्रों में स्थित संकर्षण के चिद् बीज अनन्त हेमाण्डों के रूप में जन्म लेते हैं। वे हेमाण्ड पंच महाभूतों द्वारा आवृत होते हैं।

प्रधान : भौतिक प्रकृति के अप्रकट तीन गुण

२८. श्रीमद् भागवतम् ३.२६.१०-११ :
तीनों गुणों का अप्रकट शाश्वत संयोग ही प्रकट अवस्था का कारण है और प्रधान कहलाता है। जब यह प्रकट अवस्था में होता है, तो इसे प्रकृति कहते हैं। पाँच स्थूल तत्त्व, पाँच सूक्ष्म तत्त्व, चार अन्तःकारण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा पाँच कामेंन्द्रियाँ इन चौबीस तत्त्वों का यह समूह प्रधान कहलाता है।

महत्-तत्त्व

२९. श्रीमद् भागवतम् २.५.३३, तात्पर्य :
कभी-कभी ब्रह्मज्योति के आध्यात्मिक आकाश के एक कोने में आध्यात्मिक बादल प्रकट होता है और इस तरह आच्छादित भाग महत् तत्त्व कहलाता है। तब भगवान् अपने महाविष्णु अंश द्वारा इस महत्तत्व के जल में शयन करते हैं और इस जल को कारणार्णव अर्थात् कारण-जल कहा जाता है।

महेश-धाम : शिवजी का धाम

३०. ब्रह्म संहिता ५.४३, तात्पर्य :
देवी-धाम के ऊपर शिव-धाम है, जिसका महाकाल-धाम नामक एक भाग अंधकार से ढका है। शिव-धाम के इस भाग से अंतर्भेदित सदाशिव लोक महाआलोकमय है। उसके ऊपर हरि-धाम या दिव्य वैकुण्ठलोक है।

३१. ब्रह्म संहिता ५.१०, तात्पर्य :
फिर द्रव्य शक्तिमय प्रधान पति शम्भु, जो चिदीक्षण स्वरूपाभास रूप रुद्र ही हैं, निमित्तांश माया के साथ संभोगरत होते हैं। किन्तु श्रीकृष्ण साक्षात् चिद्बलरूप महाविष्णु के प्रभाव के बिना वे कुछ भी नहीं कर पाते।

देवी धाम : दुर्गा देवी का धाम, भौतिक जगत

३२. ब्रह्म संहिता ५.४४:
भौतिक जगत की सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय की साधन-कारिणी, चित्-शक्ति की छाया स्वरूपा माया शक्ति, जो कि सभी के द्वारा दुर्गा नाम से पूजित होती हैं, जिनकी इच्छा के अनुसार चेष्टाएँ करती हैं, उन आदि पुरुष भगवान् गोविंद का मैं भजन करता हूँ।

३३. श्रीमद् भागवतम् ३.२६.५२:
यह अण्डाकार ब्रह्माण्ड भौतिक शक्ति का प्राकट्य कहलाता है। जल, वायु, अग्नि, आकाश, अहंकार तथा महत्-तत्त्व की इसकी परतें (स्तर) क्रमशः मोटी होती जाती हैं। प्रत्येक परत अपने से पूर्ववाली से दसगुनी मोटी होती है अन्तिम बाह्य परत प्रधान से घिरी हुई है। इस अण्डे के भीतर भगवान् हरि का विराट रूप रहता है, जिनके शरीर के अंग चौदहों लोक हैं।

३४. बृहद्-भागवतामृत २.३.१५-१६:
सर्वप्रथम मैंने पृथ्वी के आवरण में प्रवेश किया। मैंने वहाँ देखा कि उस आवरण तथा वहाँ के ऐश्वर्य की अधिष्ठता पृथ्वीदेवी, महान वराह के रूप में भगवान् का पूजन कर रही थी। पृथ्वीदेवी ब्रह्माण्ड-दुर्लभ वस्तुओं द्वारा उनका अर्चन कर रही थी जबकि उनके प्रत्येक रोमकूप में अनेकों ब्रह्माण्डों के वैभव घूम रहे थे।

३५. बृहद्-भागवतामृत २.३.२०-२१:
उन आवरणों में मैंने विराट रूप धारण किये हुए जल, अग्नि, वायु, आकाश, अहंकार और महत् तत्त्वको अपने-अपने आवरणों में क्रमशः मत्स्य, सूर्य, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, संकर्षण तथा वासुदेव नामक भगवान् की मूर्तियों का पूजन करते हुए देखा।

३६. ब्रह्म संहिता ५.१४:
वे महाविष्णु ही इस जगत में नारायण नाम से पुकारे जाते हैं। उन सनातन पुरुष से ही दिव्य कारण समुद्र का असीम जल उत्पन्न हुआ है। परव्योम निवासी संकर्षण के अंश उपर्युक्त सहस्त्रांश परमपुरुष भगवान् उसमें योग निद्रा में शयन करते हैं।

३७. ब्रह्म संहिता ५.१५:
उन्हीं महाविष्णु ने अपने बाएँ अंग से विष्णु की, दाएँ अंग से प्रथम प्रजापति ब्रह्मा की तथा अपनी दोनों भौहों के मध्यभाग से दिव्य ज्योतिर्लिंगम शम्भु की सृष्टि की।

३८. ब्रह्म संहिता ५.१८:
गर्भोदकशायी विष्णु जब सृष्टि करने की इच्छा करते हैं, तब उनकी नाभी से एक स्वर्ण-कमल उदित होता है। वही नालयुक्त स्वर्ण-कमल ब्रह्मा का निवास स्थान ब्रह्मलोक या सत्यलोक है।

३९. श्रीमद् भागवतम् २.१.२६, तात्पर्य :
यह ब्रह्माण्ड चौदह लोकों में विभक्त है। इनमें से सात लोक जिनके नाम भुर्, भुवर्, स्वर्, महर्, जनस्, तपस् तथा सत्य हैं, ऊर्ध्वलोक कहलाते हैं और वे एक दूसरे के ऊपर स्थित हैं। इसी तरह सात अधोलोक हैं, जो अतल, वितल, सुतल,तलातल, महातल, रसातल तथा पाताल कहलाते हैं औप क्रमशः एक दूसरे के नीचे हैं। (अधिक जानकारी के लिए श्रीमद् भागवतम् का २ स्कन्ध ५ अध्याय देखिये)

भगवान् कृष्ण के दिव्य धाम को कैसे समझे?

चैतन्य चरितामृत, मध्य २१.७ :
परव्योम के आकार की तुलना कमल के फूल से की जाती है। इस फूल का सबसे ऊपरी भाग कर्णिका कहलाता है और उसी कर्णिका के भीतर कृष्ण का धाम है। इस आध्यात्मिक कमल फूल की पंखुड़ियाँ ही अनेक वैकुण्ठ लोक हैं।

चैतन्य चरितामृत, मध्य २१.८:
प्रत्येक वैकुण्ठ लोक दिव्य आनन्द, पूर्ण ऐश्वर्य तथा स्थान से पूर्ण है और हर एक में अवतारों का निवास है। यदि ब्रह्माजी तथा शिवजी आध्यात्मिक आकाश तथा वैकुण्ठ लोकों की लंबाई तथा चौड़ाई नहीं माप सकते, तो भला सामान्य जीव किस तरह उनकी कल्पना कर सकता है?

चैतन्य चरितामृत१७.१३६ (भक्तिरसामृत सिन्धु१.२.२३४):

अतः श्रीकृष्ण-नामादि न भवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः।
सेवोन्मुखे हि जिह्वादौ स्वयमेव स्फुरत्यदः॥

इसलिए भौतिक इन्द्रियाँ कृष्ण के नाम, रूप, गुण तथा लीलाओं को समझ नहीं पातीं। जब बद्धजीवों में कृष्णभावना जाग्रत होती है और वह अपनी जीभ से भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करता है तथा भगवान् के शेष बचे भोजन का आस्वादन करता है, तब उसकी जीभ शुद्ध हो जाती है और वह क्रमशः समझने लगता है कि कृष्ण कौन हैं।

भौतिक जगत

(कुर्म, अनन्त शेष और दिक्-गजों को बताता हुआ एक अनुप्रस्थ काट)
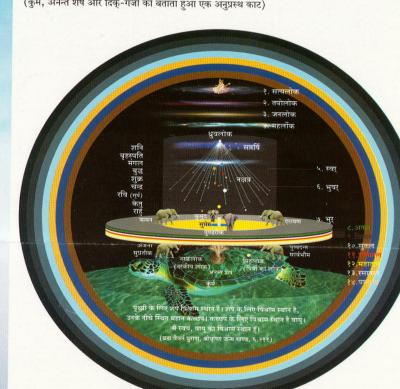
भूमण्डल (इसके सात द्वीप और सात समुद्र)

भगवान् कृष्ण का दिव्य रूप

चैतन्य चरितामृत, मध्य २०.१६५ - पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् अपने तीन मुख्य रूप : स्वयं-रूप, तद्-एकात्म-रूप और आवेश-रूप में रहते हैं।

देखें : पृष्ठ-१७० →

यह संचित्र, कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद, अन्तराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापकाचार्य, से प्रेरित हैं और उनकी शिक्षाओं पर आधारित हैं।

ईस्कॉन
श्री श्री राधा गोकुलानन्द मंदिर,
हरे कृष्ण धाम, करुपुर,
सेलम-६३६ ०१२, तमिल नाडू, भारत।
फोन : ९४४२१५३४२७, www.iskconsalem.com